अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

दूधनाथ की कहानियों का कथ्य एवं शिल्प

शोधार्थी –कांता देवी
हिंदी विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़, राजस्थान।

निर्देशक –सहायक प्रो0 डॉ0 रचना शर्मा
हिंदी विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़, राजस्थान।
DOI:shodh.55465.22124

शोध सार

दूधनाथ सिंह का कहानीकार अपने समकालीन जीवन की समस्त विसंगतियों से जुड़ा हुआ महसूस करता है, यह जुडाव उसे बहुत बेचैन और त्रासद अनुभवों के बीच ला खड़ा करता है। यही कारण है किउनका समस्त लेखन विसंगतियों और आधुनिक जीवन का खालीपन और मानसिक कष्टो से सम्बद्ध दिखाई देता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दूधनाथ सिह मानवीय स्तर पर अपनी सतह को बरकरार रखना चाहते हैं और इसीलिए सुविधाओं के झूठ और आधुनिक समृद्धियों की पीछे छिपी क्रूरताओं को उनकी संवेदना बहुत तीव्रता से महसूस करती है। उनके मनः मष्तिष्क में जो स्वातंत्रय बोध है वह अपने खिलाफ खड़ी हुई सारी स्थितियों से लड़ाई की तथा उतेजना की मुद्रा में, उनके लेखन में मूर्त होता है, हमें कोई बहुत साफ और स्थूल तौर पर उनकी स्वतंत्रता के बिंदु समझ नहीं आते लेकिन तमाम दबावों, विडम्बनाओं और व्यवस्थाओं के प्रति किसी न किसी स्तर पर उनका संघर्ष अवश्य पकड़ में आ जाता है।

मूल शब्द–आधुनिक समृद्धियों की पीछे छिपी क्रूरता, परिवेश में खड़ा रहकर, सतह, सुविधाओं के झूठ, मानवीय स्तर।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

प्रस्तावना–

दूधनाथ सिंह का लेखक अपने परिवेश में खड़ा रहकर और समस्त तकलीफों से गुजरकर भी पलायन की बात नहीं सोचता है क्योंकि वह अपने को परिवेश से अलग कोई विशिष्ट व्यक्ति नहीं मानता है– उसके अनुसार उससे मांगना या तो कायरता है या आदमियता को नकारतना है– उनक मन्तव्य ठीक उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार हैः 'सच्चा लेखक आज पहले की अपेक्षा और भी अधिक अभागा हो गया है क्योंकि उसे उन लोगों के प्रति अपने लेखकीय कर्म में (अनुभव की तीव्रता में) उत्तरदायी होना पड़ता है, जिन्हें सुविधा पूर्वक जीने की आदत पड़ गई है, जो एक बिस्तर और रजाई के लिए दुनिया का बड़े से बड़ा गुनाह कर सकते हैं और उनके कानों पर अपराध की जूं तक नहीं रेंगती, जो भाषा को तो तर्क–जाल में उलझा सकते हैं, लेकिन संपूर्ण जीवन की कठिन यंत्रणाओं को न तो सह सकते हैं न यह बात उनकी समझ में आती है – बल्कि जिनके लिए यह सब कुछ मजाक है। आज का रचनाकार ऐसे लोगों की क्रूरताओं से भी अपने को पृथक नहीं रख सकता फिर इससे बड़ा नरक और क्या हो सकता है।

निसंदेह स्वतंत्रता पूर्व क`लेखकों का दृष्टिकोण स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के प्रति बिल्कुल अलग हैं। उनके सामने तब एक लक्ष्य भी था – एक समग्र लक्ष्य – आज़ादी सामने सब कुछ साफ़ था – संघर्ष भी, नैतिकता भी, लेखक की उपलब्धि भी, लेखकीय कर्म की मूल्यवत्ता भी। आज़ादी का मिल जाना उसके संपूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व की सहज उपलब्धि थी।

लेकिन विजय के इस उत्साह में वे उन अंधेरे कोनों को नहीं देख सके, जो धीरे–धीरे फैल रहे थे और महत्व ग्रहण कर रहे थे। जाहिर है कि नयी पीढ़ी के लिए यह अजूबा था, यह एक आर्कशण भी था और एक सच्चाई भी जिसे वह इंकार नहीं कर सकती थी। उनकी लड़ाई, उनका संघर्श उनके अपनों से षुरू हो गया। उन्होनें देखा कि षोशक या अपमानकर्ता कोई सात समंदर–पार का व्यक्ति नहीं था। वे अपने ही लोग थे, अपने ही मां–बाप, भाई–बहन, संबंधी.... ?**2**

दूधनाथ सिंह का रचनाकार सृजन के स्तर पर भी और जीवन के स्तर पर भी हर जगह भागीदार की हैसियत से विद्यमान रहता है। उसकी स्वतंत्रता की संचेतना उसे शुतुर्मुगी–प्रवृति से दूर रखती है – हर गलती के प्रति वह तीव्र प्रतिक्रिया देती है– उसके

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

लिए हर अगली कहानी एक नया प्रारंभ और झेलने और परिस्थितियों को उनके सच्चे परिपृश्यों में देखने की एक नयी चुनौती है। आज का लेखक अपने को अनेक यंत्रणामय परिस्थितियों में पाता है। वह कैरियरिज्म, या आर्थिक उपलब्धि या अतिरिक्त सामाजिक प्रतिष्ठा या अतिरिक्त प्रिवेलेज को अस्वीकार करता है और अर्थहीन मानता है।

दूधनाथ सिंह यह मानते हैं कि आज के कहानीकार की सारी लड़ाई अपनी ही विरासती और संस्कारी प्रवृतियों और परम्परा के प्रति मोहग्रस्त दुर्बलताओं के खिलाफ है– हमारी सबसे बड़ी समस्या यही है कि हमने युद्ध नहीं भोगा है और हम उसके अप्रत्यक्ष दबाव से दूर भी नहीं जा सकते इसीलिए भारतीय लेखक की समस्याएं और उसकी स्थिति किसी भी अमेरीकी या यूरोपिय लेखक से अधिक कठिन और भयावह हे। एक ओर तो वह अपने समस्त पिछड़ेपन से आक्रान्त है दूसरी ओर अपने ऊपर लदी हुई शताब्दियों की सांस्कृतिक उपलब्धि और परम्पराओं सें। 3

दूधनाथ सिंह की कहानियों के भीतर स्वतंत्रता की संवेदना तलाश से पूर्व उनकी कविताओं से गुजरना अधिक आवश्यक हो जाता है क्योंकि कविता में उनकी स्वतंत्रता की आकांक्षा की मनः स्थिति के बिंदु ज्यादा संवेगात्मक अभिव्यक्ति के साथ उभर सके हैं– वे अपने चारों तरफ के संसार के प्रति तीव्र बेचैनियों को अनुभव करते हैंः–

उन्हें सूरज की प्रचंडता में कोई दम नहीं दिखाई देता, उन्हें आकाश का होना भी कोई आत्मविश्वास या सांत्वना नहीं देता, लोग उन्हें जिंदा नहीं लगते हैं– दुनिया से उन्हें खौफ – सा होता है– उनकी कविता की शब्दावली में जो तीखा आवेश है वह उनकी स्थितियों के प्रति गहरी और सघन असंतुष्टि और आक्रोश के कारण हैः''4

सुबह की लालीमा भी उनकी उत्तेजित मनः स्थिति को शांत नही कर पाती है, उन्हें सब ओर अपने ही भीतर जलती आग दिखाई देती है।''5

दूधनाथ सिंह के लिए गलत के प्रति स्वीकृति अनुचित है। स्थिति चाहे जितनी ही खतरनाक और त्रासदायक क्यों न हो – झुकना; अपने को और भी खत्म कर देना है। 3

उनकी संवेदनशील समझ देश की राजनीतिक स्वतंत्रता पर एक प्रश्नचिन्ह लगाती है– इस स्वतंत्रता में व्यक्ति की बाकी सभी आजादियों के लिए कहां जगह है ? वैयक्तिक विकास की संभवनाएं यहीं इस स्वतंत्रता की विद्रूपताओं के तले दफन हो जाती हैं। प्रकृति का सारा तथाकथित प्रशंसनीय और नैसर्गिक सौंदर्य भी आज व्यक्ति को शांति नहीं देता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

है।''6 उसे उन्मादी और समस्त आवेशों के साथ भी वह अकेला है और परिवेश की विसंगतियों में सांस लेने के लिए विवश है। लोगों की सहनशीलता पर उसे दुख होता है–उसका स्वतंत्रता बोध बहुत तीव्र है वह अपने प्रतिकूल सारी स्थितियों को समझता है। पहचानता है और प्रतिक्रिया स्वरूप परेशान हो उठता है लेकिन उसका यह बोध नितांत अकेला है और कुछ भी नही कर सकता है। उसका सारा विद्रोह और क्रोध जड़ताओं के प्रति है। 7

निश्चित रूप से यह सच है कि नयी पीढ़ी के लेखक में इस राजनीतिक आजादी की कोई आंतरिक संगति नहीं है, बाह्य रूप ये वह परेशान ही है– शायद इससे कम परेशान वह कभी भी नहीं होता। वह ज्यादा परेशान भी न होता – यदि वह गुलाम रहता। तब शायद उसकी अनुभूति का, सोचने–समझने का और व्यक्त करने का स्तर कुछ दूसरा होता। यह भी सच है कि गुलामी के दिनो में राष्ट्रीय प्रेम के जो गीत लिखे गये या प्रगतिवाद के नाम पर जो किसान मजदूर की समस्याओं के नारे लगाए गए वह सब एक फंटेस्टिकल मेनियां था। 1

निजी संबंधों से टकराहट कितनी तकलीफदेह होती है इसे दूधनाथ सिंह समझते हैं– उनकी कहानियों के पात्रों की लड़ाई अपन ही लोगों से है, और जैसा कि दूधनाथ सिंह मानते हैं यह लड़ाई व्यक्ति को आहत करती है, एक अवसाद ग्रस्त चुप में बंद कर देती है – उनकी सुखांत कहानी में इसे चुप के भीतर छिपे युद्ध को और अन्तर्द्वन्द्व को बहुत ही संवेदनशील बारीकी और गहरी कलात्मकता के साथ उभारा गया है – इस चुप के पीछे, इस एकाएक सपाट और तटस्थ बेचैनी भरी मनःस्थिति के पीछे एक मनोविज्ञान है जिसे दूधनाथ सिंह की सहभागी मर्मी दृष्टि पकड़ लेती है – ... जब निकटतम संबंधों में युद्ध छिड़ता है तो यह विरोध एक नैराश्य और अपरिमित इच्छाहीनता में बदल जाता है क्योंकि निजी अभिशाप के प्रतिकार का अर्थ होता है एक असीमित विघटन जिसके लिए साधारणतः मानव हृदय तैयार नहीं कर पाता, अपने को। ... लेकिन जिनसे हमारा कोई संबंध नहीं होता, उनकी छोटी–सी चुनौती भी हम स्वीकार कर लेते हैं। युद्ध इसी अर्थ में किसी राष्ट्र में ललकार भरता है कि वह हमसे सम्बद्ध न होकर किसी दूसरे के स्वार्थ से संबद्ध होता है। अपनों से युद्ध हमें उत्तेजित नहीं करता, चुप करता है। 8

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

दूधनाथसिंह की कहानियाँ व्यक्ति की बुनियादी बेचैनियों से टकराती हैं– व्यक्ति भी आधुनिक व्यक्ति जिसके सामने निरर्थकता और बेकारी की विकराल समस्या है– (स्वर्गवासी) जिसने पाया है कि अब संबंधों में कहीं वह गहरे बंधन सूत्र नहीं है जो बंधन का नहीं अपितु आत्मविश्वास और गहरे सम्पृक्ति बोध का सुख देते थे– बाकी रह गयी है तो महज अस्थिर आवेगों और भावुकताओं की मनोवृतियाँ – (शिनाख्त), जो सामाजिक स्तर पर अपने को एकदम निकम्मा और भोंथरा अनुभव करता है और जो अनुभव उसे एक क्रूर किस्म के रोमांच की हसरत की तरफ ले जाता है – (उत्सव), जो अपनी आंखों के सामने व्यवस्थाओं की शर्मनाक दशा देख रहा है और अपनी मानवीयता की सारी नीवें हिलती हुई पाता है – (विजेता), जो अपने ही संबंधों की छाया में गहन मानसिक संजास और दर्दनाक दबावों का अनुभव करता है – (सुखांत), जो संबंधों में उतर आई एक अजब भयावह दूरी का अनुभव करता है – (रीक्कू), जिसके समक्ष बेहद बेईमान और मक्कार व्यवस्था ह आर जो निरंतर एक पराभव के संघर्ष से गुजर रहा है– (प्रतिशोध), जो अपने देश और परिवेश के सुअरों का बाड़ा जैसा होने की तकलीफ को भोगता है – (कोरस) जहाँ जीवन – स्थितियां अन्ततः नीरसता और सदाबहार एकरसता के गर्त में ला फैंकती है – (सपाट चेहरे वाला आदमी)।

अतः दूधनाथ सिंह की कहानियों में जो दुनिया सामने आती है उस दुनिया में कहीं दीवारें नहीं है, छत नहीं है– वहां केवल टीसती हुई जिजीविशा है– डूबे और कुंठित आत्मविश्वास हैं और अपनी जड़ें कहीं भी न पाने का भयावहबोध है। इस दुनिया के लोग लेकिन सहज ही विसंगतियों को स्वीकार नहीं कर लेते हैं वे उदास होतें हैं, क्रूद होते हैं, आक्रोश व्यक्त करते हैं उत्तेजनाओं में से गुजरते हैं– अपने अन्दर निरंतर एक सुलगती हुई आग महसूस करते हैं और उनकी यह अस्वीकृति ही उनके जिंदा होने को प्रमाणित करती है – यही बेचैनियों कहानीकार की स्वतंत्रता की चेतना के असली बिंदु उभारती हैं।

स्वर्गवासी कहानी एक बेकार आदमी की विकृत मानसिकता का सशक्त चित्रण करती है। वह अपने को सारी सुविधाओं और व्यवस्थाओं में कहीं नहों पाता है– चरित्र–रहित, नाकारा, शौहदा जैसे विशेषण उसके दिमाग से सदा चिपके रहते हैं – जब, जहां तक आँखें जाती हों – तल्ख लोग और बेहाल दुनिया ही दिखाई देती हो तब आदमी यदि बहुत ही दुःसाहसी और शक्ति सम्पन्न न हो तब तक वह पैरों तले जमीन नहीं

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

पायेगा– ऐसे में बहुत संभव है कि आदमी निठल्लेपन और निर्लिप्तता को ही अपनी नियति मानकर एक दार्शनिक किस्म के सुख में अपने को केन्द्रित कर ले। 'स्वर्गवासी' का वह ऐसे ही नकारेपन को अपनी अंतिम संभावना मान बैठा है– उसने बहुत ही निर्लिप्त तसल्ली से अपने को सारी तकलीफों से अलग कर लिया है। वह सिर्फ, अपने को ही चाहने और अपनी ही चिंता करने की स्वार्थपरता तक पहच गया है। बहन के घर में पड़े रहना और अपमान के बोध को बार–बार नजरअंदाज करके वहीं जमे रहना–सारी चिताओं – दुश्चिन्ताओं की पड़े–पड़े जुगाली करते रहना यर्थाथ जीवन स्थितियों से उसके पलायन को जाहिर करता है। यह स्थिति बहुत सी अनजानी कुंठाओं और अस्तित्व संकट के बोध के घतीभूत हो जाने के बाद जन्मी है। बचपन से ही वह अमानवीय और क्रूर किस्म के मजाक कर के खुशी अनुभव करता था – भांजियों के अंगूठे में आत्मिन के टुकड़े चुभाना, कभी उनके मुह में अपने मुंह में भरी पान की पीक उलट देना, बच्चों के पेट पर नाखून से सफेद गहरी लकीरें खींचना, बीड़ी से उनका हाथ जला देना, या उनकी हथेली पर थूक देना'[9] उसकी ये सारी हरकतें उसके कुंठित और अदना अनुभव करके के बोध का ही परिणाम मानी जा सकती हैं।

प्रेमिका का पति उन दोनों के लिए एक जबरदस्ती चिपके हुए कर्मकाण्ड की तरह था... परम्पराओं की तरह, जिसके होने से एक हलब्बी औरत एक गुमनाम आदमी की और उंगली उठाने के लिए कुछ अपशब्द मिल जाते थे जैसे पत्नी, बीबी, फाहशा, बेवफा, कमीनी, पतिव्रता और अय्याश, लफंगा आदि। यदि वह चिपकी हुई परम्परा मर जाय... मैं कभी कभी सोचता–तो नर–मादाओं की ओर उंगलियां उठाने के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले ये विशेषण नष्ट हो जाये। स्पष्ट है वह स्त्री पुरूश के दायरों में बंधे संबंधों और उनकी मर्यादा से नफरत करता है– संबंधों की स्थापना यदि व्यक्ति को कुछ जीवंत अनुभव प्रदान करती है तो उनकी सारी खामियां भी, उनके बीच में आने वाले खतरे भी स्वीकार हैं – जीवन्तता और अनुभव की स्वतंत्रता की खातिर ह ीवह बहुत अर्से के बाद भी अपनी पुरानी प्रेमिका के साथ जाने की एक तीव्र इच्छा को महसूस करता है–यद्यपि इस बीच अतीत के वे सारे जुड़ाव जाने कहां टूट कर गायब हो गए हैं फिर भी शायद वे कुछ जिंदा क्षणों को फिर से पा सकें, इस संभावना की खातिर वे फिर से मिलते हैं।

निष्कर्ष

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 04, (Oct-Dec 2023)

हालांकि अब उम्र का तकाजा है कि अब व्यवस्थाओं और बर्जनाओं से टकराने की न कोई अहमियत बाकी है और न ही प्रतिष्ठाओं को ठुकराने का वह पुराना साहस। लेकिन बावजूद इसके, वह कायर और झूके हुए, आदमी के रूप में अपनी कल्पना नहीं करना चाहता– उसका यह हठ अमहत्वपूर्ण नहीं है इसमें चेतना में मिली हुई, स्वतंत्रताओं के लिए टकराने की मनः स्थिति के तेवर अभी शेष है। एक उम्र तक आकर आदमी की छोटी–मोटी प्रतिष्ठाएं इतनी महत्वपूर्ण हो जाती हैं कि वह उन्हें बचाने के लिए बड़ी–बड़ी मजेदार संभावनाओं को भी इंकार कर देता है। इस तरह एक प्रकार की कायरता को वह कवच के रूप में इस्तेमाल करता है। क्या मैं वही कर रहा हूं ? यह विचार आते ही महज चुनौती के रूप में मैनें उसे पुकार लिया था।

1. दृष्टव्य : नई कहानी : दशा, संभवना –संपादक – श्री सुरेन्द्र, पृ0 322
2. दृष्टव्य : समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि–संपादक–डॉ0 धनंजय। इलाहाबाद–1670 ई0 पृ0 99
3. सपाट चेहरे वाला आदमी, पृ0 88
4. दृष्टव्य : समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि – संपादक – डॉ0 धनंजय पृ0 66
5. दूधनाथ सिह 'एक और भी आदमी, पृ0... 116
6. दूधनाथ सिह अपनी शताब्दी के नाम, पृ0..53
7. दूधनाथ सिह अपनी शताब्दी के नाम पृ0... 116
8. दूधनाथ सिह ' सुखान्त,, पृ0..69